<u>स्वर्ण जयंती उत्सव 'आंचल से परचम तक' का समापन समारोह एवं वार्षिक समारोह 'आहंग–**2025**' का भव्य आयोजन</u>

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में 30 नवम्बर 2025 को स्वर्ण जयंती उत्सव "आंचल से परचम तक" का समापन समारोह एवं वार्षिक समारोह "*आहंग–2025"* उत्साह के साथ दोपहर 2:30 बजे प्रारंभ हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) फैज़ान मुस्तफ़ा,
माननीय कुलपति, चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, पटना एवं पूर्व कुलपति, NALSAR यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद थे I मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) फ़ैज़ान मुस्तफ़ा का सम्मान सह-प्रबंधक श्री मोहम्मद फ़रहानुल्लाह द्वारा किया गया। उन्होंने उन्हें शॉल और सम्मान–पत्र भेंट किया।

मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) फैज़ान मुस्तफ़ा ने अपने ओजस्वी संबोधन में कानूनी शिक्षा, संविधानिक मूल्यों, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के महत्व पर प्रकाश डाला।उन्होंने कहा कि विविधता का संरक्षण ही संविधान में निहित अल्पसंख्यक अधिकारों का मूल आधार है।

धार्मिक स्वतंत्रता अच्छे नागरिकत्व और राज्य के प्रति निष्ठा के विपरीत नहीं है, और सभी प्रगतिशील समाजों को अपने अल्पसंख्यकों की धार्मिक मान्यताओं का सम्मान करना चाहिए।उन्होंने कहा कि विविधता का उत्सव और संरक्षण ही भारतीय संविधान के तहत अल्पसंख्यक अधिकारों का वास्तविक तर्क है। किसी संस्कृति का संरक्षण तभी संभव है जब उस संस्कृति को साझा करने वाले समूह के साथ-साथ एक सहायक सामाजिक और राजनीतिक वातावरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने आगे कहा कि संस्कृतियाँ मूल्यवान हैं क्योंकि वे हमारी समस्याओं को विशिष्ट समाधान प्रदान करती हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि पंजाब, कश्मीर, लक्षद्वीप और कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में सैकड़ों हिंदू अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान कार्यरत हैं। यहाँ तक कि दिल्ली में भी कुछ सिंधी संस्थान हिंदुओं द्वारा अल्पसंख्यक संस्थानों के रूप में चलाए जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि अल्पसंख्यक संस्थान गैर-अल्पसंख्यकों को शिक्षा देकर महान राष्ट्रीय सेवा कर रहे हैं।जिन राज्यों में अल्पसंख्यक संस्थानों की संख्या अधिक है, वहाँ की समग्र साक्षरता दर और शिक्षा स्तर भी अधिक है। भारत का विकसित देश बनने का सपना तब तक साकार नहीं हो सकता जब तक इसके अल्पसंख्यक, विशेषकर मुसलमान, अशिक्षित बने रहते हैं। अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा में वास्तव में राष्ट्रीय हित निहित है।

उन्होंने छात्राओं को अपनी वास्तविक क्षमता पहचानने तथा राष्ट्र की प्रगति में योगदान हेतु परचम को अपने हाथों में लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की उन्नति उसकी बौद्धिक प्रगति से निर्धारित होती है। उन्होंने अनुच्छेद 29 का उल्लेख किया जो अल्पसंख्यकों के हितों के संरक्षण से संबंधित है। जो नागरिकों के किसी भी वर्ग को अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि और संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार देता हैI

उन्होंने बताया कि अल्पसंख्यक संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कामना की कि यह कॉलेज भविष्य में विश्वविद्यालय का रूप लेकर समाज के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। उन्होंने मोरक्को की उस ऐतिहासिक विश्वविद्यालय का उदाहरण दिया, जिसे एक महिला फ़ातिमा अल-फ़िहरी ने स्थापित किया था। उन्होंने कहा कि ज्ञान के प्रसार में सदैव महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, अतः उन्हें बौद्धिक क्षेत्र में अग्रणी बनना चाहिए।

सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. आनंद शंकर सिंह, चेयरमैन, कॉलेज कंसॉलिडेशन कमेटी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, ने कहा कि संस्था ने अपने जीवन का 50 साल पूरे किए हैं, इसे केवल सेलिब्रेशन नहीं कहा जा सकता यह पूरी यात्रा का एक सार है हमीदिया कॉलेज पूरे देश में ज्ञान की लौ बांट रहा है। इल्म, तालीम और तहजीब की जो रोशनी हमीदिया कॉलेज बांट रहा है वह भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। जो इस देश की विरासत है।

आगे उन्होंने 1934 के मैकाले के ड्राफ्ट का जिक्र किया और भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को बताते हुए कहा कि दस हज़ार साल पुरानी हमारी संस्कृति है और हमारी संस्कृति दुनिया की संस्कृति है जिसमें विश्व कल्याण का भाव सम्मिलित है। उन्होंने एक हदीस का जिक्र किया कि " मोहम्मद साहब ने कहा है कि हम यहां रेगिस्तान में बैठकर हिंद से आने वाली ज्ञान की ठंडी हवा को महसूस कर रहे हैं।" तहजीब के साथ और नैतिक मूल्यों के साथ अगर बच्चों को शिक्षित किया जा रहा है तो उसकी नींव हमारे पूर्वजों ने रखी है। और हम दुनिया के कल्याण के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

इसके साथ ही कॉलेज की मैनेजर श्रीमती तज़ीन एहसानुल्ला को कॉलेज की 50 वर्षों की सेवा पूर्ण करने पर विशेष सम्मान प्रदान किया गया। प्राचार्यI प्रो. नसिहा उस्मानी ने उन्हें शॉल और सम्मान-पत्र भेंट किया। उन्होंने संस्थान की बुनियाद और उपलब्धियों की चर्चा की। उनके सशक्त मार्गदर्शन और लोकतांत्रिक नेतृत्व में कॉलेज ने अनेक चुनौतियों के बावजूद उल्लेखनीय प्रगति की। उन्होंने कहा कि 1975 में रोपा गया छोटा पौधा आज एक विशाल वृक्ष बन चुका है, जिसकी शाखाएँ, फल और फूल पूरे विश्व में फैल रही हैं और जिसकी छाया का लाभ असंख्य छात्राएँ उठा रही हैं। और लड़कियां यहां से तालीम हासिल करके आगे बढ़ती रहें इसके लिए उन्होंने आशीर्वाद दिया।

उन्होंने मौलाना अली मियां नदवी के वे शब्द उद्धृत किए, जो उन्होंने कॉलेज की नींव रखते समय कहे थे— "यदि हमारी नीयत और उद्देश्य नेक हों तो हमें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।" उन्होंने अपनी पचास वर्षों की सेवाओं को सदक़ा-ए-जारिया बताया।

कार्यक्रम का आरम्भ स्वागत भाषण से हुआ, जो कॉलेज की प्राचार्या प्रो. नासेहा उस्मानी ने दिया। उन्होंने कॉलेज की गौरवशाली शैक्षणिक व सांस्कृतिक उपलब्धियों का उल्लेख किया। अतिथियों को स्मृति–चिह्न एवं पुष्प–गुच्छ भेंट किए गए।

कार्यक्रम की शुरुआत हम्द से हुई, जिसे नेदा फ़ातिमा (बी.ए. द्वितीय वर्ष) ने पेश किया। इसके तुरंत बाद छात्राओं ने सूफ़ियाना रंग में क़व्वाली प्रस्तुत कर समारोह के माहौल को सुरों और तालियों से भर दिया। 'दास्तान-ए-हमीदिया' शीर्षक से प्रस्तुत दास्तानगोई में आयशा शमीम (पूर्व छात्रा) एवं नकीबा निसार (बी.कॉम प्रथम वर्ष) ने कॉलेज की पचास वर्षीय यात्रा को प्रभावशाली अंदाज में प्रस्तुत किया। जिसे उपस्थित सभी लोगों ने खूब सराहा। कॉलेज कोयर द्वारा प्रस्तुत "कॉलेज तराना" ने कार्यक्रम में नई ऊर्जा भर दी।

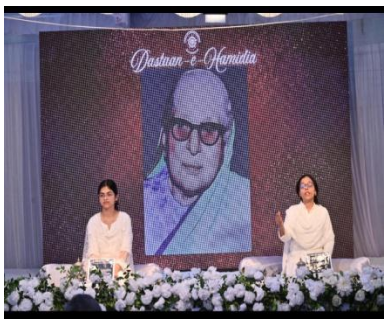

मुख्य अतिथि द्वारा कॉलेज की वार्षिक पत्रिका "काविश–2025" और "तारीख़-ए-हमीदिया" का विमोचन किया गया।प्रोफेसर नसरीन बेगम, प्रोफेसर सबीहा आज़मी , डॉ नुदरत महमूद, डॉक्टर शबाना अजीज, डॉ नुज़हत फातिमा ने वार्षिक पत्रिका का विमोचन करवाया I

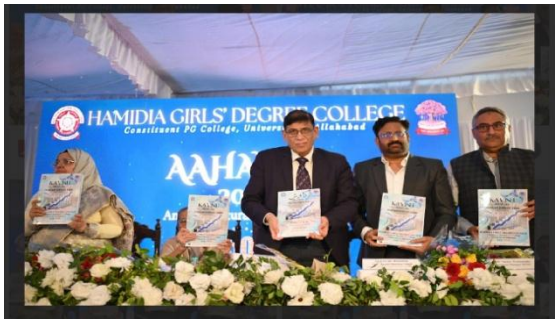

इसके उपरांत स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को मेडल प्रदान किए I

1.टी.आर.शेरवानी मेमोरियल गोल्ड मेडल

अफीफा बानो, बी.ए. तृतीय वर्ष (कॉलेज टॉपर)

2.कनीज़ ज़ोहरा मेमोरियल गोल्ड मेडल

सिदरा ख़ान, बी.कॉम तृतीय वर्ष (टॉपर)

3.मसर्रत फातिमा मेमोरियल गोल्ड मेडल

सय्यदा ज़ेबाइश फ़ातिमा आबिदी, बी.वॉक तृतीय वर्ष (फ़ैशन डिज़ाइनिंग) टॉपर

4.प्रोफेसर चंद्र पंत मेमोरियल गोल्ड मेडल

तस्मिया फ़ातिमा, बी.ए. तृतीय वर्ष (इतिहास) टॉपर
5.आलिया बेगम मेमोरियल गोल्ड मेडल
ज़ोहरा फ़ातिमा, एम.ए. अंतिम (मीडिवल हिस्ट्री) टॉपर
6.आबिदा खातून मेमोरियल गोल्ड मेडल
सारा हसन, एम.ए. अंतिम (उर्दू) टॉपर

धन्यवाद ज्ञापन सुश्री नीरजा वर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग) ने किया। राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सिद्दीका जाबिर (सहायक प्रोफेसर, अरबी विभाग) एवं डॉ. ज़रीना बेगम (एसोसिएट प्रोफेसर,उर्दू विभाग) ने किया।मुख्य अतिथि का परिचय डॉ. सिद्दीका जाबिर, सहायक प्रोफेसर (अरबी विभाग) द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर पीके साहू, भूतपूर्व कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रोफेसर तारिक़ महमूद, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, प्रोफेसर आदेश श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रोफेसर दीपाली पंत, एग्जीक्यूटिव मेंबर ऑफ इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रो. बरान फ़ारूक़ी, मैनेजर, किदवई गर्ल्स इंटर कॉलेज,डॉ मरियम आज़मी,एस एस खन्ना डिग्री कॉलेज, हमीदिया गर्ल्स इंटर कॉलेज का स्टाफ, इस्लामिया इंटर कॉलेज का स्टाफ,किदवई गर्ल्स इंटर कॉलेज का स्टाफ और हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज के सभी टीचिंग स्टाफ, नॉन टीचिंग स्टाफ एवं सभी छात्राएँ उपस्थित थीं।यह स्वर्ण जयंती समारोह कॉलेज के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में दर्ज हो गया।